मन की बात

A Letter to the Government of India

आज़म कुरैशी

Sample Copy. Not For Distribution.

मन की बात

Sample Copy. Not For Distribution.

Publishing-in-support-of,

EDUCREATION PUBLISHING

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.educreation.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN: 978-1-61813-532-2

Price: ₹ 190.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Educreation.

Printed in India

Sample Copy. Not For Distribution.

मन की बात

A Letter to the Government of India

आज़म कुरैशी

EDUCREATION PUBLISHING
(Since 2011)
www.educreation.in

Sample Copy. Not For Distribution.

Sample Copy. Not For Distribution.

मन की बात

A Letter to the Government of India

'तुम्हारा ही नाम आज़म कुरैशी है?' उसने मुझसे गुस्से मे डांटते हुए पूछा।

'हाँ।....पर क्या हुआ?' मैंने उसकी तरफ आश्चर्य से देखते हुए कहा।

'पागल है क्या....? कब से अंदर तुम्हारा नाम पुकारा जा रहा है'। उसने गुस्से के साथ तेज आवाज़ मे कहा।

'ओह....सोर्री' मैंने उससे घबराते हुए कहा। और अंदर की तरफ जाने लगा।

'May I come in sir' मैंने दरवाजे पर खड़े होकर पूछा।

अंदर रूम मे तीन लोग इंटरव्यू के लिए कुर्सी लगा कर बैठे थे। उन्होने मेरी तरफ देखा।

Sample Copy. Not For Distribution.

'क्या नाम है तुम्हारा?' उनमे से एक ने पूछा।

'सर....आज़म कुरैशी'। मैंने घबराते हुए कहा।

'अच्छा तुम्हारा ही नाम आज़म कुरैशी है?' उन्होने मुझसे पूछा।

'जी सर'। मैंने कहा।

'कहाँ थे...? कब से आप को बुलाया जा रहा है'। उन्होने कहा।

'सोर्री सर...आने मे देर हो गई'। मैंने कहा।

'कम इन'। उन्होने कहा।

मैं अंदर जाकर उनके सामने लगी टेबल पर पूछ कर बैठ गया। और जल्द ही अपने बैग से फ़ाइल निकाली और उनके सामने टेबल पर रख दिया।

उन्होने मेरी तरफ देखा और बिना कुछ कहे मेरी फ़ाइल को खोल कर देखने लगे।

'आप अपने बारे मे कुछ बताइये'। उन्होने मेरी तरफ देखते हुए कहा।

'सर मेरा नाम आज़म कुरैशी है'। और मैं अंबेडकर नगर जिला का रहने वाला हूँ'। मैं आगे कुछ और कहता की बीच मे ही उन्होने कहा।

'ओह...गुड। आप का सब कुछ अच्छा है'। उन्होने मेरा resume देखते हुए कहा।

Sample Copy. Not For Distribution.

'थैंक यू सर' मैंने शुक्रिया अदा करते हुए कहा।

'देखो बेटा तुमने आने मे देर करदी और हमे जितने लोगों की ज़रूरत थी वो पूरे हो गए। इस लिए अब हमारे पास जगह नही है।

अगर आप नौकरी करना चाहते हैं। तो आप को कुछ डोनेशन देना होगा'। उन्होने कहा।

'सोर्री सर.....अगर आप के पास जगह नही है। तो कोई बात नही मैं कहीं और देख लूँगा'। मैंने कहा और अपना resume लेकर उठ गया। और सीधे बाहर की तरफ निकल गया। मेरी इस हरकत पर वो सब मुझे बड़ी ध्यान से देखने लगे। पर मैं उनको अनदेखा कर के आगे बाहर की तरफ बढ़ गया।

मैं सोच रहा था। कि साला सरकारी नौकरी होती तो कुछ बात भी समझ मे आती है। प्राइवेट के लिए घूस, ये तो मुझसे नही होगा। उस दिन मैंने तय कर लिया, कि मैं ऐसी जगह नौकरी कभी नही करूंगा जहां पर ऐसे दलाल और भरष्ट लोग मौजूद हों।

मुझे तो ऐसी जगह नौकरी करना है। जहां ईमानदारी हों, प्यार हों, अमन हों और लोग भी अच्छे हों।

अगले दिन मैं शाम को टहलता हुआ रहीम चाचा के दुकान की तरफ बढ़ा। जो एक चाय की दुकान थी। पूरे गाँव के लोग यहीं पर चाय पीने के लिए आते थे। और

Sample Copy. Not For Distribution.

यहाँ राजनीति भी बहुत होती थी। मतलब यहाँ पर बैठने वाले लोग ज्यादा तर राजनीति की ही बात करते थे। कि कौन क्या कर रहा है? कौन खराब है कौन अच्छा है आदि। कभी कभी मुझे इनकी बातों से ऐसा लगता था, कि जैसे सारा देश यही से चल रहा हो। पर मेरी राजनीति मे कोई खास दिलचस्पी नही थी। इस लिए मैं कभी इनकी बातों पर ध्यान नही देता था। उस दिन जैसे ही मैं चाचा की दुकान के सामने पहुचा, उनकी नज़र मुझपर पड़ी...

'तूँ...आ गया बेटा किधर था दो दिन से..? मैंने तुझे देखा नही। सब खैरियत तो है?' रहीम चा ने पूछा।

'अल्हम्दुलिल्लाह रहीम चा...आप की दुआ से सब बढ़िया हैं'। मैंने कहा।

'और बता तेरी नौकरी का क्या हुआ..? सुना था कि तू कहीं इंटरव्यू देने गया था। उसका क्या हुआ?'रहीम चाचा ने पूछा।

'उसका तो कुछ नही हुआ'। मैंने अफसूस के साथ कहा।

'क्यूँ...इंटरव्यू मे बहुत कठिन सवाल पूछ लिया था क्या?' चाचा ने पूछा।

'हाँ चाचा कुछ ऐसा ही समझ लो'। मैंने धीरे से कहा।

Sample Copy. Not For Distribution.

'तो फिर तूँ दिन रात क्या पढ़ाई करता है? जब सवाल के जवाब नही बता सकता'। चाचा ने कहा।

'किताबों से सवाल पूछता तो ज़रूर बताता, पर उसका सवाल out of book था'। मैंने कहा।

'Out ऑफ book का क्या मतलब?' चाचा ने पूछा।

'वो सब नौकरी के लिए घूस मांग रहे थे'। मैंने कहा।

'इन्ही भरष्ट लोगों की वज़ा से आज हमारा देश खोकला होता जा रहा है। देश के कोने कोने मे भ्रष्टाचार फैला हुआ है। जो देश के साथ साथ आम जनता को भी दीमक की तरह चाट रहा है'। चाचा ने गुस्से मे कहा।

चाचा के मुह से भ्रष्टाचार जैसा शब्द सुनकर मैं सोचने लगा की चाचा बिलकुल सही कह रहे है। भरष्टाचार ही देश की सबसे बड़ी बीमारी है। आज भ्रष्टाचार जैसी बीमारी को रोकने की ज़रूरत है। वरना ये दिन दूर नही की जब यही भ्रष्ट लोग जो आज अपना ईमान बेच रहे हैं। कल चंद रूपियों की लालच मे देश भी बेच सकते हैं। ऐसे इंसानों का क्या भरोसा जिनके जिंदगी का मकसद सिर्फ पैसा ही है। ऐसे लोग पैसे के लिए सिर्फ धरती माँ का ही नही बल्कि अपनी माँ का भी सौदा कर सकते हैं।

'पर चचा ये बताइए क्या भ्रष्टाचार जैसी भयंकर बीमारी का कोई इलाज है...? या फिर यह बीमारी भी

Sample Copy. Not For Distribution.

शुगर की तरह ही है। जो इंसान के मरने के बाद ही खतम होगी'। मैंने पूछा।

'अब मैं क्या बताऊँ बेटा जिस तरह से आज लोगों के चरित्र स्वार्थ से जुड़ रहे हैं। मुझे तो नही लगता की इस बीमारी का भी कोई इलाज है। बरसों से इस बीमारी को देख रहा हूँ। कुछ दिन की ज़िंदगी और बची है, इसी तरह देखते देखते एक दिन मर जाऊंगा'। चाचा ने दुख के साथ कहा।

'कोई तो रास्ता ज़रूर होगा इसे रोकने का'। मैंने कहा।

'अब ये देश तुम लोगों के हाथ मे है। अगर बचा सकते हो भ्रष्टाचार से तो बचा लो'। चाचा ने कहा।

चाचा की बात को सुनकर मुझे बहुत दुख हुआ। मैं सोच मे पड़ गया। कि अभी 70 साल ही हुआ था, देश को आज़ाद हुए। और लोग कितनी आगे निकल चुके हैं। अभी भी हिंदुस्तान मे बहुत से ऐसे घर, गाँव और पिछड़े इलाक़े थे। जो अंग्रेज़ो के ही जुल्म से उभर नही सके थे। कि कुछ लोग उनको फिर से दबाने की कोशिश कर रहे हैं।

और इस देश को फिर से गुलामी की तरफ ले जाने की पूरी कोशिश कर रहे हैं।

Sample Copy. Not For Distribution.

इससे ज्यादा मैं चाचा से कुछ और पूछता, कि वो दुकान पर व्यस्त हो गए। उनको व्यस्त देख कर मैं भी वहाँ से चल दिया।

वहाँ से लौटने के बाद अब मुझे दो टेंशन हो गयी थी। एक नौकरी की और दोसरे देश की।

मैं सोच रहा था। कि आज हर डिपार्टमेंट के लोग बिना किसी डर के हर वो काम कैसे कर लेते है? जिसकी इजाजत ना तो कानून दे रहा है। और ना ही कोई मजहब या धर्म।

पता नही कब तक ऐसा चलता रहेगा? लोगों मे खुले आम घूस मांगने की इतनी हिम्मत कहाँ से आती है? जो बिना किसी डर और खौफ के ये कुर्सी पर बैठने वाले लोग कर रहे हैं।

शायद ये मेरे अंदर का देश प्रेम ही था। कि उस दिन मुझे इस बात से दुख नही था। कि मैं बेरोजगार हूँ, या मुझे नौकरी नही मिली। आज मुझे सिर्फ इस बात की ज्यादा चिंता थी, कि क्या होगा इस देश का? जहां हर कदम पर भ्रष्टाचार फैला हुआ है। हर ऑफिस और दफ्तर मे चोर बैठे हुए हैं।

जहां पर 75% इंजीनियर और डॉक्टर अपने टैलंट से नही बल्कि घूस, आरक्षण और शिफारिश पर नियुक्ति किए जाते है। क्या होगा इस देश का जहां पर सरकारी नौकरी

Sample Copy. Not For Distribution.

के लिए 50% सीट पहले ही देश के ठीकेदारों द्वारा बिक जाती है?

ऐसे ही सोचते विचारते महीनो बीत गए। जिंदगी भी दिनो के साथ साथ बदतर होती चली गई। दिन ब दिन टेंशन और प्रैशर बढ़ता चला गया। एक एक पैसे के लिए तरसना पड़ रहा था। अब घर से पैसा मांगना भी उचित नही था। इंजीनियर बनाने के लिए और आगे बढ़ाने के चक्कर मे 8 लाख रूपिये पहले ही घर वालों ने खर्च कर दिया था। अब तो वक़्त था, की उन पैसों को सूत समेत वापिस लौटाया जाए। पर क्या करे कैसे करे? कुछ समझ मे नही आ रहा था।

अब मुझे यह महसूस हो गया था, कि बेरोजगारी कितनी बुरी चीज है। और कितनी बुरी ज़िंदगी होती है उन लोगों की जो लोग शिक्षित होने के बाद भी बेरोजगार है।

जहां तक मेरी सोच है, अगर हिंदुस्तान मे कोई सबसे ज्यादा परेशान और मुहताज है, तो वो बेरोजगार शिक्षित व्यक्ति ही है।

आज हम लोगों की हालत को देख कर बहुत से बाप अपने बच्चे को पढ़ाई से दूर ही रखना चाहते है। वह भी सोच रहे हैं, कि उनका अपना बच्चा क्या करेगा पढ़ लिख कर? सब पढे लिखे लोग बेरोजगार बनकर सिर्फ

Sample Copy. Not For Distribution.

घूम ही तो रहे है। और उनकी यह सोच भी शायद कुछ हद तक सही ही है।

ऐसे ही बेरोजगारी का सिलसिला चलता रहा।

अचानक एक दिन मुझे कंपनी से एक जॉब का ऑफर मिला। मैं खुशी खुशी वहाँ पर इंटरव्यू देने के लिए पहुचा। मैंने देखा की वहाँ पर तो पहले से ही मेरे जैसे बहुत से बेरोजगार और असहाय जैसे शिक्षित लोगों की लंबी लाइन लगी हुई थी। वह सब भी एक उम्मीद के साथ खड़े थे, कि शायद आज उनको भी नौकरी मिल जाए।

सभी लोग अपना resume लेकर खड़े थे। सभी परेशान थे, सबके चेहरे पर बेरोजगारी का दुख झलक रहा था। उनके अंदर छुपी परेशानियो को उनकी आंखो मे देखा जा सकता था। उनकी परेशान हालत को देखकर शायद मेरे अंदर इंसानियत जग उठी, मैं खुद अपनी परेशानी को भूल गया।

मैं सोचने लगा की आज जो मेरी हालत है उसी हालत से ये लोग भी गुजर रहें हैं। एक शिक्षित बेरोजगार की हालत मुझसे बढ़िया और कौन जान सकता था।

आज मुझे यह महसूस हुआ की हिंदुस्तान मे शिक्षित होना भी एक पाप है। उनकी परेशानी को देखने के बाद मुझे यह अहसास हुआ, कि अगर आज मुझे

Sample Copy. Not For Distribution.

नौकरी मिल भी गई तो शायद मुझे खुशी नही होगी। बल्कि उससे ज्यादा खुशी होगी, कि इन लाचारों को नौकरी मिल जाए। यह सोच कर मैं वहाँ से बिना इंटरव्यू दिए वापिस चला आया।

ये सब देखने के बाद अब मैंने सोच लिया, कि अब मुझे नौकरी नही करनी है। उससे अच्छा होगा, कि मैं हिंदुस्तान मे बेरोजगारी के खिलाफ आवाज़ उठाऊँ। कि आखिर क्या बात है हमारे देश मे ऐसा क्यूँ हो रहा है पढे लिखे लोगों के साथ? जो उन्हे पढ़ने लिखने और पूर्णरूप से शिक्षित होने के बाद दर दर की ठोकरें खानी पड़ रही है।

एक तरफ तो यहाँ की सरकार बच्चों को पढ़ाने और जागरूक बनाने के लिए खाना, पानी, कपड़ा लत्ता, कापी किताब, मुफ्त मे देकर उनको पढ़ाने और जागरूक बनाने के लिए सर्व शिक्षा का अभियान चला रही है। उनके लिए तो सारे इंतेजाम किए जा रहे हैं।

पर वही बच्चे पढ़ लिख कर बड़े होकर जब शिक्षित हो जाते हैं। तो फिर उनके लिए कोई इंतेजाम क्यूँ नही है? शिक्षित लोगों के लिए भी कोई अभियान होना चाहिए।

अब मैं जानना चाहता था। कि इसके पीछे क्या मजबूरी है? क्यूँ हमारे प्रदेश मे लोगों की सबसे ज्यादा यही हाल है? यहाँ पर रोजगार क्यूँ नही है? आदि।

Sample Copy. Not For Distribution.

Get Complete Book
At Educreation Store
www.educreation.in

Sample Copy. Not For Distribution.

मन की बात

100 मे 95 बेईमान फिर भी मेरा देश महान। बचपन मे मैंने बाबा से सुना था। तब मुझे इसका मतलब नही पता था। जब पैरों पर खड़ा हुआ तो सच्चाई सामने आई। कई जूते घिस गए इंजीन्यरिंग की जॉब ढूँढने मे क्यूंकी मेरे पास ना ही कोई सोर्स था और ना ही पैसे थे।

ऑफिस हो या दफ्तर, पुलिस थाना हो या चौकी, ब्लॉक हो या तहसील, कचहरी हो या कोर्ट, स्कूल हो या कॉलेज, क्रमचारी हो या बाबू, नेता हो या मंत्री, कस्बे का विधायक हो या प्रधान। इस छोटी सी उम्र मे हर जगह से गुजरा हर तबके के लोगों को देखा। इन सभी जगहों पर सिर्फ लोग एक ही भाषा समझते है, पैसा और सिर्फ पैसा और कुछ नही। हर योजना और हर काम मे घोटाला और भ्रष्टाचार हो रहा है। अफसोस कि भ्रष्टाचार आज किसी एक शहर या प्रदेश को नही बल्कि पूरे देश को अंदर से खोकला कर रहा है। आज इंसान पैसे के लिए हर वो काम करने को तयार है, जिसकी इजाजत ना कानून देता है और ना ही कोई धर्म या मजहब। दुख की बात यह है, कि आज सबसे ज्यादा भ्रष्ट भी शिक्षित लोग हैं, और सबसे ज्यादा बेरोजगार भी शिक्षित लोग ही हैं। हमे यह नही भूलना चाहिए की भ्रष्टाचार कैंसर की तरह एक लाइलाज बीमारी है। अगर आज हमने इसको रोकने के बारे मे नही सोचा तो वो दिन दूर नही की देश फिरसे गुलाम ना बने।

लेखक से संपर्क हेतु :
azamquraishi4@gmail.com

EDUCREATION
PUBLISHING (Delhi)
www.educreation.in

Also available as an eBook
NON-FICTION
ISBN 978-1-61813-532-2
9 781618 135322 >

Sample Copy - Not For Distribution.